Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या ९/५५
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFRENCE BOOK

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

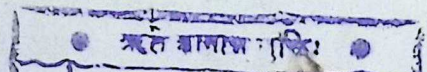

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वाधिकार स्वरक्षित हैं ।

जनार्दन कोष ।

[प्रथम भाग]

सिन्धुदेशीय डेराख्य वास्तव्य धन्यधन कुलावर्तस
श्रीयुत पण्डित टिकनलालात्मज पं० भगवद्दत्त-
शर्म्मा ने निर्माण किया ।

.....

सं० १९७४ शकः १८३८ ।

लाहौर

लाला मोतीलाल मैनेजर के अधिकार से
मुफ़ीद-आम प्रैस में छपा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४८
३/२१०४.

* ओ३म् *

पुस्तक की संख्या.....

पुस्तकालय-पञ्जिका-संख्या.....

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ आघोषणा ॥

श्रीमन्तः ! सभ्या ! प्रचुर अरविन्द काव्य कोषों के मकरन्द शब्दों ... मलिन्द होकर उद्गीर्ण यह मधु कोष ... वासिन् प्रेयस् कनीयस् स्वीय सहोदर के अटल नाम पर उपस्थित किया, यह कोष प्रायः पाठशाला के विद्यार्थियों के लिये बहुत ही उपयोगी है, जिसके दृष्टिमात्र से प्रचलित शब्दों का पूर्ण रीति से भान हो जाता है, बहुधा इस कोष में यौगिक शब्द इस लिये दिये हैं कि कहीं विद्यार्थियों को कठिनता न दीख पड़े, इसके पढ़ने से स्वयं शब्दार्थज्ञ हो जाएं, श्रीमन्तः !

यत्र कुत्राप्यनौ चित्यं दृश्यते वै महात्मभिः ।
क्षन्तव्योयंसदादासोऽपार्थकपद लेखकः ॥

इत्यभ्यर्थयतिक्षमां डेरागाजी खान नगर निवासी,
श्चद्वशङ्कमो भगवद्दत्तः ।

A. S. M. स्कूल, भूपालवाला
ज़िला सियालकोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ समर्पण ॥

कोष का प्रथम भाग श्रीयुत मान्यवर मुख्याध्यापक (हैड मास्टर) ल ० हरिराम जी बी० ए० के समर्पण करता हूं, आशा है कि महानुभाव इस पुस्तक को स्वीकार करेंगे ॥

आप का कृपाकांक्षी डेरा गाजीखान निवासी
पं० भगवत्तदत्त शर्म्मा A. S. M. स्कूल
भूपालवाला जिला सियालकोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीः ॥

वेद-वेदाङ्ग-वक्तारं भर्त्तारं सम्पदां भुवि ।
कर्त्तारं च भवो-ऋत्याः नौमि तं परमेश्वरम् ॥१॥
देव राजं सदाचार्यं श्रीकृष्णदत्त शास्त्रिणं ।
बालानन्दश्च वेदाङ्गं वन्दे निर्विघ्न शान्तये ॥२॥
ग्रन्थ ग्रन्थान्तरेभ्योहं सारमा कृष्य यत्नतः ।
कोशं मिश्रित भाषायां कुर्वे छात्रहिताय वै॥३॥

सृष्टि वर्णन

प्रभु	पु०	परमात्मा
परमाणु[१]	,,	बरीक किणके
पृथिवी	स्त्री०	ज़मीन
अप् (ब्.)	,,	जल
तेजस्	न०	तेज-प्रकाश
वायु	पु०	हवा
आकाश	,,	आसमान
काल	,,	समय

(नोट) १ जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजस्तस्य षष्ठितमोंऽशश्च परमाणुः स उच्यते ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिक्	स्त्री०	दिशा
प्राची	,,	पूर्व दिशा
अवाची	,,	दक्षिण दिशा
प्रतीची	,,	पश्चिम दिशा
उदीची	,,	उत्तर दिशा
कोण	पु०	कोन का नाम है
ईशान कोण	पु०	उत्तर और पूर्व की मध्य दिशा का नाम है।
आग्नेय	,,	पूर्व और दक्षिण की मध्य-दिशा का नाम है।
नैर्ऋत्य	,,	दक्षिण और पश्चिम की मध्य दिशा का नाम है।
वायव्य	,,	पश्चिम और उत्तर दिशा की मध्य कोण का नाम है।
वेद	,,	वेद भगवान्
वर्ष	न०	साल
मास	पु०	महीना

(नोट) १ ऋग्वेदः— यजुर्वेदः— सामवेदः—अथर्ववेद अग्नेः ऋग्वेदः, वायोः यजुर्वेदः,, आदित्यात् सामवेदः। अंगिरसो-ऽथर्ववेदश्चाजायत॥ इति वेदानां प्रकाशाविर्भावः॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि	स्त्री	रात
घस्र	पु०	दिन
ऋतु	पु०	मौसम
वसन्त	,,	चेत्र और वैशाख
ग्रीष्म	,,	ज्येष्ट-आषाढ
वर्षा	स्त्री	श्रावण—भाद्रपद
शरत्	,,	आश्विन—कार्तिक
हेमन्त	पु०	मार्ग शीर्ष—पौष
शिशर	न०	माघ फाल्गुण

शरीरांगवर्णन।

मानव	पु०	मनुष्य—आदमी
वामा	स्त्री	औरत
आकृति	,,	शकल
शिखा	,,	बोदी
केश	पु०	वाल
कुन्तल	,,	टेढे वाल-बुलबल वाल
वेणि	स्त्री	स्त्रियों की गुत
शबरी	,,	कन्यायों की मेण्ढी
शिरस्	न०	सिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काकुद्	न०	तालु
मस्तिष्क	,,	ममई, या, दिमाग
ललाट	,,	माथा
भ्रू	स्त्री०	भौंवें
कूर्च	न०	भौंए की मध्य जगह
चक्षुष्	न०	आंख
अपाङ्ग	पु०	पिप्पलियां
अस्रु	न०	आंसू
कपोल	पु०	गण्डस्थल–गल
कर्ण	न०	कान
किट्ट	न०	कान की मैल
नासिका	स्त्री०	नाक
वदन	न०	मुख
ओष्ठ	पु०	होठ
रद-दन्त	,,	दान्त
हनु	स्त्री०	हनु
जिह्वा	,,	जीब
जृम्भा[१]	,,	ऊंबासी
छिक्का	,,	छींकना

नोट१—जृम्भं नपुंसके च-जृम्भम्-जृम्भा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिबुक[१]	न०	ठोडी
श्मश्रु	,,	दाढी-मूच्छ
ग्रीवा	स्त्री०	गर्दन
स्कन्ध	पु०	कंधा
कक्षा	स्त्री०	कच्छ-या-बगल
बाहु	पु०	भुजा
प्रगड	पु०	(दौ) डौले
कफोणि	स्त्री०	इरक
कर्पर	पु०	गिसनीया-वीणी
मणिबन्ध	पु०	कलाई
हस्त	पु०	हाथ
करभ	पु०	हाथ का पृष्ठ
अंगुलि	स्त्री०	अंगुली
अंगुष्ठ	न०	अंगूठा
तर्जनी[२]	स्त्री०	पहिली अंगुल
मध्यमा	स्त्री०	दूसरी०
अनामिका	स्त्री०	तीसरी०
कनिष्ठका	स्त्री०	चौथी०

१—त्रिबुक-पु० ओष्ठाधो भागे-इति श. चि. ॥

नोट २—अङ्गुष्ठं विना प्रथमा तर्जनी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नख	पु०	नाखून
मुष्टि	स्त्री०	मूठ
तालिका	,,	ताली
चपेटिका	,,	चपेट
दक्षिण	पु०	दहना
वाम	पु०	बायां
पार्श्व	,,	तरफ-या-पासा
कुक्षि	स्त्री०	कुच्छर-या-कुख
हृदय	न०	दिल
यकृत्	,,	कलेजा
जठर	,,	पेट
स्तन	पु०	मम्में
चूचुक	न०	मम्मों का मूंह
नाभि	स्त्री०	डु (धु) ञी
कटि	,,	कमर
नितम्ब	पु०	पट्ट
पायु	पु०	मल निकलने का स्थान
पर्द	,,	पड़-अधोवायु

(नोट) १ चूचुकम् न. कुचाग्रे चूष पाने बाहुक कादुकः ।> अ. चि. ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिश्न	,,	मूत्र स्थान
भगा	स्त्री०	स्त्री मूत्र स्थान
वृषण	पु०	अण्डकोश
सक्थि	न०	सथल
जानु	न०	घुटने
जंघा	स्त्री०	टांग
गुल्फ-प्रपद	पु०	गिट्टा
पार्ष्णि	,,	खुरी वा एड़ी
पाद	,,	पाऊं
अस्थि	न०	हड्डी
मांस	न० पु०	मास
वल्लूर	त्रि०	सूखा मास
रुधिर	न०	लहु
धमनी	स्त्री०	नाड़ी
त्वक्	,,	त्वचा शरीर का चमरा
पृष्ठ	त्रि०	पीठ
काय	पु०	शरीर

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर वर्णन.

नगर	न०	शहर
मन्दिर	,,	मन्दिर
गोपीनाथ	पु०	देव-नाम है
राजन्	,,	राजा
सम्राज्	,,	बादशाह
न्यायशाला	स्त्री०	कचहरी
पथिकशाला	,,	मुसाफ़िर खाना
प्रासाद	पु०	राजमहल्ल
अन्तःपुर	न०	रानियों का घर
नगरोश	पु०	डिपटी कमिश्नर
न्यायाध्यक्ष[१]	पु०	जज्भ
निर्णे(तृ)ता[२]	,,	मुन्सिब
कराध्यक्ष उपपुरशासक	पु०	तहसीलदार

नोट १—प्राड् विवाक् पु० प्राट् प्रश्नकर्त्ता। प्रच्छज्ञीप्सायां विशेषेण वाक् यस्य, वाक् वाणी सरस्वतीत्यमरः, झज्झ इतिकेचित्, अपरेतु प्रश्नसम्बन्धावच्छिन्नत्वादियं विशेषोक्तिर्वाक्, वाग्की ऋविषय इति वदन्ति।

२—निर्णयकर्त्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्[1]कील	,,	वकील
कोष	,,	खजाना
कोषाध्यक्ष	,,	खजाञ्ची
दण्डपाशक	,,	सिपाही
दण्डपाशक स्वामिन्	,,	थानेदार
प्रणिधि-गुप्तचर	,,	जासूस
वादिन्	,,	मुद्दई
प्रतिवादिन्	,,	मुद्दालेह
साक्षिन्	,,	गवाह
शुल्क[2]	पु०	मुसूल
शुल्क स्थान	न०	मुसूलो-चुंगी
लेखहार	पु०	चिट्ठीरसान
तस्कर-चौर[3]	,,	चोर

१—वाचं कीलयतीति।

२—शुल्कः पु० न० घट्टादिदेये रक्षानिमित्त रूपे राजभागे, रक्षानिर्वेशोराजभागः शुल्क इत्युक्तेः, स्थलजलपथादिगावाणिज्याकारिभ्यो नियतस्थानेपुद्रव्यानुसारेण राजग्राह्यभागे, दान० इ० भा० अ० इति० श० चि०॥

नोट ३—चोरयतीतिचोरः, चुरस्तेये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारागार	पु० न०	जेलखाना
कौतुकागार	पु० ,,	अजायब घर
जन्त्वागार	पु० ,,	चिड़िया घर
शिवर	न०	छावनी
सेना	स्त्री०	फौज़
सेनानायक	पु०	करनेल
शतघ्नी[1]	स्त्री०	तोप
गुलिका	,,	गोली
भुसुण्डी-एकघ्नी[2]	स्त्री०	बन्दूक
क्षुरिका	स्त्री०	छुरी
मार्जनी परिष्क(त्त)र्त्ता	पु०	चूड़ा
यन्त्र	न०	कला
यन्त्रालय	पु०	कारख़ाना
वाष्प	न०	भाप
यान	न०	हसवारी
रथ	न० पु०	रथ-वेहली
वायुयान	न०	हवाई जहाज़
वाष्पयान	न०	मोटरकार
द्विचक्रिका[3]	स्त्री०	सैकल

१—शतं २प्रतिहन्तीति । २—एकं २प्रतिहन्तीति ।

(नोट) ३ द्वेचक्रेयस्यास्त सोक्ता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाष्पशकटि	,,	रेलगाड़ी
चालनयन्त्र	न०	कांटा
पेषणी	स्त्री०	चक्की
तिलपेषण[१]	पु०	कोल्हू
कूप	पु०	कूंअ
सरस्	न०	तालाब
वापी-दीर्घिका	स्त्री०	बांवली
सागर	पु०	समुद्र
विप्र	पु०	ब्राह्मण
क्षत्रिय	पु०	क्षत्री
वैश्य	पु०	बनिये-कराल
शूद्र	,,	झीवरादि
ब्राह्मणी	स्त्री०	ब्राह्मण की स्त्री
क्षत्रियाणी	स्त्री०	क्षत्री की स्त्री
वैश्या	स्त्री०	वैश्य की स्त्री
शूद्राणी	स्त्री०	शूद्र की स्त्री
श्रेष्ठिन्	पु०	सेठ
वणिक्	पु०	व्यापारी
वापित	पु०	नाई

नोट १—स्त्रीत्वे, तिलपेषणिका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षुर	पु०	उस्तरा
क्षुरभाण्ड	न०	रछानी
शिल्पकारिन्	पु०	मिस्तरी
रजक	पु०	धोबी
रङ्गकार	पु०	रङ्गरेज़
कुलाल	पु०	कुम्हार
भारवाह	पु०	मजूर, कुली
दास	पु०	भृत्य-नौकर
मल्ल	पु०	पहलवान
मल्लभूमि	स्त्री०	अखारा
सौविदल्ल	पु०	दलाल
उपानह विक्रे (तृ) ता	पु०	मोची
(चर्मकार) क्रे (तृ) ता	पु०	खलीदार
यवन	पु०	मुसलमान

विश्वविद्यालय वर्णन ।

विश्वविद्यालय	पु०	कालेज
पाठशाला	स्त्री०	स्कूल
रात्रि पाठशाला	स्त्री०	नाईट स्कूल
दशमश्रेणि पा०	स्त्री०	हाईस्कूल

(नोट) १ श्रेणि स्थाने कक्षाया उपयोगोपि कर्मीचंद्रः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टमश्रेणि पा०	स्त्री०	मिडल स्कूल
पञ्चमश्रेणि पा०	स्त्री०	प्राईमरी स्कूल
तृतीय श्रेणि पा०	स्त्री०	बराञ्च स्कूल
मुख्याधिष्ठा (तृ) ता	पु०	मैनेजर
मुख्याध्यापक[1]	,,	हैडमास्टर
द्वितीयाध्या०	,,	सैकण्ड मास्टर
तृतीयाध्या०	,,	थर्ड मास्टर
चतुर्थाध्या०	,,	फोर्थ मास्टर
पञ्चमा ध्या०	,,	फ़िफ़थ मास्टर
षष्ठमा ध्या०	,,	सिक्स मास्टर
इतिहासा[2] ध्या०	,,	हिस्टरी मास्टर
भूगोल[3] विद्या ध्या०	,,	जागराफिया मास्टर
गणित विद्या ध्या०	,,	हिसाब मास्टर
संस्कृताध्या०	पु०	संस्कृत टीचर
यावनी विद्या ध्या०	,,	पर्शन टीचर
न्याया[4] ध्या०	,,	साईंस मास्टर
चित्रा ध्या०	,,	ड्रैङ्ग मास्टर

(नोट) १ मुख्य स्थाने प्रधानोपयोगोपि स्त्रीचेत् मुख्याध्यापिका (२) ऐतिहासिकः। (३) भौगोलिकः।

(नोट) ४ प्रत्यक्षवादिन साङ्ख्याध्यापक इत्यपरे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यायामाध्या०	पु०	वर्ज़िश मास्टर
लेखक	पु०	क्लर्क
च्छात्र[1]-विद्यार्थिन्	पु०	स्टूडेण्ट
च्छात्रप्रधान	पु०	मानीटर
च्छात्रालय	पु०	बोर्डिंग
पीठ[2]	पु०	चौंकी
लेख	पु०	लिखाई
लेखपोठिका	स्त्री०	टेबल मेज़
काष्ठपीठ	पु०	कुरसी
वेत्रासन[3]	नं०	कुरसी
द्विच्छात्रपीठिका[4]	स्त्री०	डस्क
पञ्चछात्रपी०	स्त्री०	(बैं) बिञ्च
शय्यापीठिका	स्त्री०	तख्तपोष (श)
अध्यापक लेखकपाट	पु०	बोर्ड
भस्मपाषाण लेखनी[5]	स्त्री०	चाक

(१) छादयति गुरुदोषानिति छात्रः रक् प्रत्ययः ।

(२) धातुपाषाणकाष्टेश्च पीठस्त्रिविध उच्यत इतिश-चि ।

(३) वेत्रासनम् न० वेत्रनिर्मितासनं, आसन्द्यंस्याद्वेत्रासन मासन्दीति हेमचन्द्रः । (४) च्छात्रद्वयपीठिका इत्यादि ।

(बोट) ५ भस्म पाषाण वर्तिरिति केचित् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख शिला	,,	स्लेट
लेखिनी	,,	कलम
धातु लेखनी	,,	होल्डर
लेखनी पेटिका	,,	कलमदान
मसि[1]	,,	स्याई
मसिपात्र	न०	दवात
करगल	,,	कागज़
वृक्षमद	पु०	गूंद
घर्षक[2]	,,	रबर
पुस्तक	न०	किताब
चौलकोष पुस्तक	न०	प्राकटबुक
पाठ	पु०	लेसन
अभ्यास[3]	,,	मशक करना
परस्परालाप	,,	कनवर्सेशन
पठन	न०	पढना
स्मृति स्त्री० स्मरण	न०	याद करना
प्रश्न	पु०	सवाल

(१) मसिः स्त्री पत्राञ्जने, मसी परिणामे इन्।

(२) घर्षयति करगल मिति तथोक्तः।

(३) अभ्यसनमभ्यासः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर	न०	जबाब
परीक्षा	स्त्री	इम्तिहान
परीक्षा स्थान	न०	सेण्टर
प्रश्न पत्र	न०	सवाली पेपर
शुल्क	पु० न०	दाखला
कर	पु०	फ़ीस
मासिक	न०	वज़ीफा
पदक	न०	तमगा
पारितोषक	न०	इनाम
प्रार्थनापत्र	न०	अर्जी
परित्याग पत्र	न०	अस्तीफ़ा
भ्रष्टपद	त्रि०	माकूफ़
स्वीकार	त्रि०	मनजूर
वेतन	न०	तनख्वाह
अङ्गन	न०	देढी-वेरा
व्यायाम	पु०	वरज़िश
क्रीड़ा	स्त्री०	खेल
क्रीड़ाङ्गन	न०	ग्रौण्ड
सीमा	स्त्री०	हद्द-या-गोल
सीमाध्यक्ष	पु०	गोलकीपर

(नोट) १ पुरस्कार इत्यपि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्दुक	न०	गेण्ड
किरकिरिका	स्त्री०	किरकिट
यष्टिक्रीड़ा	स्त्री०	हाकी
कन्दुक प्रहार क्रीड़ा[1]	स्त्री०	फूटबाल
कन्दुक क्रीड़ा	स्त्री०	टेन्स
कटुक्रीड़ा	स्त्री०	कबड्डी
पारिक्रमिकाक्रीड़ा	स्त्री०	दौटका शपाकी
विरोध[2] क्रीड़ा	स्त्री०	मैच
धावन	न०	दौड़ना
उच्छुलन	न०	उच्छलना-च्छरप्ये
रज्वाकर्षण	न०	लज-या रस्सी का खचना

आपण वर्णन.

आपण	न०	बाज़ार
हट्ट	पु०	हट्टी
मिष्टान्नक(र्तृ)र्त्ता	पु०	हलवाई

(नोट) १—प्रहारः पादप्रहार इति।

२—विशेषेणरोधोऽवरोधनं यस्यां क्रीड़ायां तथोक्ता, प्रत्याम-णिङेत्यपि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिष्टान्न	न०	मिठाई
मोदक	न०	लड्डू
पथ्योदन	न०	तोषा
दुग्ध	न०	दूध
दधि	न०	दही
नवनीत	न०	मक्खन
तक्र	न०	च्छास
शर्करा	स्त्री०	शक्कर
सितशर्करा	स्त्री०	खांड-चीनी
कुण्डलिनी[1]	स्त्री०	जलेबी
पूरिका[2]	स्त्री०	पूरी
फेनिका[3]	स्त्री०	फेनी
गुड	पु०	गुड़
मोहनभोग	पु०	मेसू-मोहन थाल
अपूप[4]	पु०	मालपूआ
सन्धान[5]	न०	अचार
मधुर सन्धान[6]	न०	मुरब्बा

नोट १—कुण्डलमस्या अस्यां वाऽस्ति । २—शष्कुलीत्याख्या ।
३—फेनिकेति भा० चि० । ४— अपूपः पिष्टके गोधूमे, न पूयते,
पूर्वाविक्षरणे बाहुलकात्पः वलिलोपः । ५—संधीयतेयत्तत् ।
६—मधुरस्य यत्सन्धानं मधुरसन्धाने फलसन्धानमित्यपरे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प सन्धान[1]	न०	गुलकन्द
सक्तु	पु०	सतुवा

भूषण वर्णन.

स्वर्णकार	पु०	सुनारा
निकष	पु०	कसौटी
मणिबन्ध[2]	पु०	कलाई
गुम्फ[3]	पु०	बाजूबन्द
केयूर	न०	बाजूबन्द
स्वर्ण	न०	सोना
रजत	न०	चांदी
कङ्कण	न०	कङ्गन

१—पुष्पाणां पाण्डर्यादीनां यत्सन्धानं तत्पुष्प सन्धानम्।

(नोट) २—मणिबन्धः पु. प्रकोष्ठ पाण्योः सन्धिः जणबलम-यनानां घटिका मणि विषयेऽयं मणि बन्धे (कलाई) इति प्रयोगः सार्थो कर्त्तव्यः किमन्येनाप्रसिद्ध प्रयोगेन, अस्य मणिबन्ध-स्य संघटनापि सञ्ज्ञा घटीतीति दिक्॥

स्थाने कर ग्रन्थौ--कलाई. इं. भा.-हस्त मूले मणिबंध्यतेऽत्र बन्ध बन्धने-हलश्चेति घञ् पु० इति श० चि०॥

(३) गुम्फः पु० गुम्फन-ग्रन्थने-बाहोरलङ्कारे दोर्भूषण-स्य अणि इति श. चि.।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माला	स्त्री	हार
मुद्रा	स्त्री	अंगूठी
चूडा[१]	स्त्री	चूडा वा चौंक
कर्णिका	स्त्री	कर्णफूल
नूपर	न०	नूरे
कुण्डल	न०	कर्ण भूषण
अवतस	न०	कर्ण भूषण

प्रसिद्ध वस्त्र वर्णन।

वस्त्र	न०	कपड़ा
दकूल	न०	दक्षट्टा
कञ्चुक	न०	अङ्गरखा
अर्द्धोरुक्	न०	लांघा
काचागल[२]	न०	कोट
पादावरण	न०	जुलावां

(नोट) १ चूड़ा स्त्री बाहु भूषणे भूषण मात्रे शिरः शिखा भूषणेषु चूड़तियादवः पिच्छिदादिभ्योऽङ् ॥

(नोट) २ काचिना मर्गलानि सन्ति यस्मिन् वस्त्रे तत्काचार्गल वस्त्रं, कोट्टहति कुट्ट प्रतापे, उपोद इत्याप्ताः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्तावरण	न०	दस्ताने
कुचा वरण	न०	चोली
पीठा वरण	न०	मेजपोश
आतपत्रम्-आतपच्छत्रम्	न०	छाता
कौपीन	न०	लिङ्गोट लिङ्गोटी
कटिवस्त्र	न०	कांएच
हस्त वस्त्र	न०	रुमाल
पट्टवेश्म	न०	खेमा–तम्बू
वितान	न०	चन्दवा
शतरञ्ज[१]	न०	शतरञ्ज
कौशेय	न०	रेशमी कपड़ा
आस्तरण	न०	विछौना
उपधान	न०	सिराना
उत्तरीय	न०	स्त्रियों के सिरका कपड़ा
उष्णीष	पु०	पटका
निचोल	पु०	चोला–कुर्त्ता
पादगाम	पु०	पजामा

(१) शतं जनान् रञ्जयतीति यत् वस्त्रं तत् । शतरञ्ज क्रीडायामप्येवं वाक्यम् अत्रतु प्रसङ्गात् सप्तानां रङ्गानां समाहारः । सप्तरङ्ग त्रि·शतरञ्जीति ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]नासिका शोधक	पु०	रुमाल
कम्बल	पु०	कम्बल
[2]गलबन्ध	पु०	गुलूबन्द
शाटिका	स्त्री	धोती
जवनिका	स्त्री	कनात
शय्या	स्त्री	सेज
[3]शाणी	स्त्री	सणका कपड़ा
मेखला	स्त्री	तड़ागी
[4]उर्णा—उर्ण पदिका	स्त्री	पट्टी

प्रसिद्ध धान्य वर्णन ।

गोधूम्र	न०	गेहूं
[5]रूक्षान्न	न०	बाभरा—ज्वार—मकी
चणक	पु०	छोले

(नोट) १ नासिकां शोधयतीतितथोक्तः ।

(२) गलस्य कण्ठस्य बन्धस्तथोक्तः लिकटाई ॥

(३) स्त्री शणसूत्रमयी पट्टिका तत्तुल्यानि वस्त्राणिच इति शा० चि० । (४) उर्णा तुमप कोम ।

(५) क्षुद्रान्नम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रीहि	पु०	चावल
माष	पु०	मांह
मुद्ग	पु०	मूंग
मसूर	पु०	मसर
यव	पु०	जौ
कलविङ्क	पु०	इन्द्र जौ
श्रावणिक	पु०	सांवक
फलिनी[1]	स्त्री०	कङ्गनी

शाक वर्णन

कन्दल	न०	गन्दल
गृञ्जन	न०	गाज़र
सर्षपशाक	न०	सरूं का साग
सर्षपकन्द	न०	शलगम
सौभाञ्जन	न०	सुवांजना
वृत्ताङ्क[2]	न०	वैंगन
लसन[3]	न०	लसन-थोम

(नोट) १ वृत्ताङ्कोमलंपथ्यं कुपथ्यंबदरीफलम्।

(२)— प्रियङ्गुफलिनीफलंभवि शेषः।

(३) लसनं-पलाण्डुः-गोजिह्वा शलोध्रम्; सर्षपकन्दम्-गृञ्जनं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्द	न०	कचालू
मृणाल	न०	भेंह
शलीन्ध्र	न०	खुम्बी
शमिफल	न०	शङ्गर
रम्भाफल	न	केले को फली
त्रिफल[१]	त्रि०	त्रिफला
काञ्चनार	पु०	कचनार
पलाण्डु		पिआज़
अलाबू	स्त्री०	कद्दू
मूलिका	स्त्री०	मूली
गोजिह्वा	स्त्री०	गोबी
शिखरिणी[२]	स्त्री०	क(ड़ी) दी
यवागू	स्त्री०	खिचरी

यद्येषां शाकानां माषेमूलिकायाश्च भक्षणे निषेधः, तथापिमुख्यगौणयोर्मुख्ये व्यवहारः, इतिवाक्यं पुरस्कृत्याद्ययोः पलाण्डुरसनयोर्द्वयोर्भक्षणे सर्वथा निषेधस्तयोर्गुणप्राधान्यादाप्तवाक्याच्चेति दिक् ॥

(१)—त्रयाणां हरीतकी-आमलक-कलिद्रुमाणां फलानां समाहारस्तत्, यस्य माता गृहे नास्ति तस्य माता हरीतकीति वैद्याचार्य्यः ॥

नोट२—शिखरिणी-स्त्री-रसाला प्रभेदे यथा, गव्यमावर्त्तितं दुग्धं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस वर्णन ।

लवण	न०	लून
लवङ्ग	न०	लौङ्ग
दाड़िम फल	न०	अनारदाना
जीरक	पु०	जीरा
शुष्कशलाटु	पु०	आम चूर
(इ) एला	स्त्री०	इलायची
राजिका	स्त्री०	राई औड़
मरीचिका	स्त्री०	मिरच
हरिद्रा	स्त्री०	हल्दी
शुण्ठि[१]	स्त्री०	सुण्ड (ढ)
कृष्ण[२] मरीचिका	स्त्री०	काली मिरच

निबद्धं दधिमाहिषघृतेकी कृत्यपदेघृष्टं शुभ्रशर्करयासमम्-एलालवङ्ग कर्पूर मरीचैश्चवसमन्वितं नाम्नाशिखारणी कुरुर्याद्रचिं सकलवल्लभां, इति श. चि. ॥

१—शुण्ठ्यां कफम् ॥ अथ हिंगुधानव्च प्रसिद्धम् ॥

२—एवं रक्तमरीचि कऽपि किंवदना ॥

—:-०-:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह वर्णन।

गृह	न०	घर
इष्टिका गृह	न०	ईंटों का घर
आमेष्टका गृह	न०	कच्ची ईंटों का घर
मृत्तिका गृह	न०	मट्टी का घर
काष्ठ गृह	न०	लकड़ का घर
प्रकोष्ठ	न०	कोठा कमरा
भित्ति	स्त्री०	दिवार
कपाट	त्रि०	किवाड़-या-फ़ट्टा
अर्गल	न०	हुरका
वातायन	न०	रोशनदान
अट्टालिका	स्त्री०	अटारी-माड़ी
कुट्टिम	पु०	फर्श
सोपान	न०	सीढ़ा
जलस्रोत	पु०	परनाला
गृहिणी	स्त्री०	स्त्री
दुहि (तृ) ता	स्त्री०	लड़की
अपत्य	न०	पुत्र
उपमा (तृ) ता	स्त्री०	दाई
दासी	स्त्री०	नौकरानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानस	न०	बावर्ची खाना
पौरोगव-सूद	पु०	बावर्ची-मेहरा
चुल्लि[1]	स्त्री०	चुल्हा
इन्धन	न०	लकड़
पानपात्र	न०	प्याला
कांसपात्र	न०	काए का वर्त्तन
पैतलपात्र	न०	पित्तल का वर्त्तन
लोहपात्र	न०	लोह का वर्त्तन
भ्राष्ट्र[2]	पु०	कड़ाई
कमण्डलु	पु०	गड़वा
कलश	पु०	गागर
घट	पु०	घड़ा (रा)
कंस[3]	पु०	गिलास
स्थाली	स्त्री०	बलटोई-देग

(नोट) १ चुद्यतेऽग्निर्वा इन् प्रत्ययः।

(२) भ्राष्ट्रः—अम्बरीषं चणकादि भर्जन पात्रस्य—खापर वान्हे इ. श. चि.॥

(३) कंसं चा प्राणिनि। कंसोऽस्त्री पानभाजनम्। प्राणिनि तु कंसो नाम कश्चिद्राजा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्वि	स्त्री०	करछी
गोधूम्र चूर्ण	न०	गेहूं का आटा
झर्झरिका[१]	स्त्री०	रोटी
सूप	पु०	दाल
प्रातराश्य	न०	लुकमा—छाख वेला
आहार	पु०	खुराक
आज्य—घृत	न०	घी
तैल	न०	तेल
केश शोधिनी	स्त्री	कंघी
अञ्जन	न०	सुरमा
कज्जल	न०	कज्जल
मलिनी[२]	स्त्री	रजोवती स्त्री
स्नान	न०	न्हाना
फेनिल[३]	पु०	साबुन
क्षार	पु०	खार—सज्जी

(नोट) १ झर्झरिका स्त्री रोटिका विशेषे यथा धूमघी रचिता रोटी प्रोक्ता झर्झरिका बुधैः ॥ इ. श. च. ॥

(२) मलिनी स्त्री रजस्वलायां नार्याम् ऋतुमत्याम् । मलोऽस्त्यस्याः अत इनिठनौ ॥ इ. श. चि. ॥

(३) फेनोऽस्या अस्मिन् वास्ति फेनादिलच्चेतिचका राल्लचूफेनिलो हरीठाया मपीति श. चि. ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रक्षालन	न०	धोना
मकरन्द	पु०	अ(इ)तर
रङ्ग काष्ठ	न०	पलङ्ग
मञ्च	पु०	मञ्चा—खटरा
सूचिका	स्त्री	सुई
सूत्र गुटिका	स्त्री	गोली धागे की
तर्कु	स्त्री	चरखा
पेषिणी	स्त्री	चक्की
उलूखल	न०	उखली
मुसल	पु०	मोला
शूर्प	न०	छज
मार्जनी	स्त्री	बुहारी
चालनो	स्त्री	छारनी
चुर्क्रिका	स्त्री	चङ्गेर
कुण्डिका	स्त्री	कुण्डी—दंवरी
दण्ड	पु०	दण्डा
वस्तु	न०	आम चीजें

(नोट) १ चागेर्यां चकञ्यथने चकरन्थो रुच्चोपधाया इति रक इ. ब्रा. चि. ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबन्धि वर्णन

प्रपितामह	पु०	परदादा
पितामह	पु०	दादा
जनक	पु०	पिता
पित्रव्य	पु०	चाचा
पित्रव्यज	पु०	चाचा का पुत्र चचेरा
भ्रा (तृ) ता	पु०	भाई
सहोदर	पु०	सगा भाई
भगिनी पति	पु०	भोनैया
भागनेय	पु०	भाणजा
मातुः स्वस्रपति	पु०	मासर
श्वशुर	पु०	सौरा
श्याल	पु०	साला
जामा (तृ) ता	पु०	दामाद
सजातीय	पु०	शरीक
सुत्पन्न	पु०	धर्मपुत्र
मातामह	पु०	नाना
मातुल	पु०	मामा
मातामही	स्त्री०	नानी
मातुलानी	स्त्री०	मामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रपितामही	स्त्री०	परदादी
पितामही	स्त्री०	दादी
मा (तृ) ता	स्त्री०	माँए
पित्रव्यस्त्री	स्त्री०	चाची
पित्रव्यजजाया	स्त्री०	चाचे के पुत्र की स्त्री
भगिनी	स्त्री०	भैंन
मातृ स्व(स्रृ)सा	स्त्री०	मासी
श्वसुराणी	स्त्री०	सास
भार्य्या-जाया	स्त्री०	स्त्री०
सपत्नी	स्त्री०	सौतली-सौकन
वधू, स्नुषा	स्त्री०	नूं-नईपरनी

संख्या वर्णन।

एक (ए)	त्रि०	एक
द्वि (द्वि०)	त्रि०	दो

(नोट) १ एवं सहोदर जाया-भ्रातृजाया-इयाकजजाया ॥

(नोट) २ विशेष्यस्योहयालिङ्गंविभक्ति वचनानिच तान्येव चप्रयोज्यानि विशेषणादेष्वपि। यथा—एकःपुरुषः—एकास्त्री—एकं कुलं—एकं रूप्यकम्—एकं पणकमित्यादिः। अपिच शुक्लयजुर्वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संहितायाम् । अ० १७ मेधाविथिर्ऋषिर्निचृद्बृहतीछन्दः, अग्निर्देवता, इमामेअग्नऽइष्टकेधेनवःसन्वेकाचशतंचसहस्रञ्चसहस्रञ्चायुतञ्चनियुतञ्चप्रयुतञ्चार्बुदञ्चन्यर्बुदञ्चसमुद्रश्चमध्यञ्चान्तश्चपरार्द्धश्चैतास्तेऽअग्नऽइष्टकाधेनवःसन्त्वमुष्मिल्लोके । एवं सर्वत्र ॥ गणित विद्यायामेषः सङ्ख्या क्रमः, एकं (१) दशं (१०) शतञ्चैव (१००) सहस्रं (१०००) अयुतंतथा (१००००) लक्षञ्च (१००००० नियुतञ्चैव (१०००००० कोटिः (१००००००० अर्बुदमेव च (१०००००००० वृन्दः (१०००००००० खर्वः १००००००००० निखर्वश्च (१००००००००० शंखः (१०००००००००० पद्मञ्च (१००००००००००० सागरः (१०००००००००००० अन्त्यं (१००००००००००००० मध्यं (१०००००००००००००० परार्द्धयञ्च (१००००००००००००००० दशवृद्धयायथाक्रमामिति । केचित्तु० [परार्द्ध] न० ब्रह्मणयुषोऽर्द्धे, यथा, निजेन० तस्यमानेन आयुर्वर्षशतं स्मृतम्, तनूपनाश्यं तदर्द्धञ्च परार्द्धमभिधीयते । इ० वि० पु० । हृश्ये, परस्य ब्रह्मणोर्द्धं स्थानंतस्मिन् हिपरब्रह्मे पलभ्यते । दशमध्यसंख्यायां [१०००००००००००००००००, स्थानात् स्थानं दशगुणमेकस्माद्गुणिने द्विजततोष्टादशमेभागेपरार्द्धमभिधीयते । इ० श० चि० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रि (ब०)	त्रि०	तीन
चतुर् (ब०)	त्रि०	चार
पञ्चन् (ब०)	,,	पांच
षट् (ब०)	,,	छे
सप्त (ब)	,,	सात
अष्टन् (ब)	,,	आठ
नव (नव)	,,	नौ
दश (ब०)	,,	दस
विंशति	स्त्री०	बीस
त्रिंशत्	स्त्री०	तीस
चत्वारिंशत्	स्त्री०	चालीस
पञ्चाशत्	स्त्री०	पचास
षष्टि	स्त्री०	साठ
सप्तति	स्त्री०	सत्तहर
अशीति	स्त्री०	अस्सी
नवति	स्त्री०	नव्वे
शत[१]	न०	सौ

(नोट) १ शतापुनर्दशोत्तराः पुंसिचं । अयं शतः, इदंशतमित्यादिः । लक्षाकोटिः स्त्रियाम् । इमंलक्षा, इयंकोटिः । बालक्षानियुतञ्चतदित्यमराः । क्लीवेपिलक्षम् । शंकुपुंसि । सहस्रः क्वचित्, इ० सि० कौ० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्र	न०	हजार
लक्ष्य	न०	लाख
कोटि	स्त्री०	करोड़
पद्म	न०	पद्म

परिमाण वर्णन ।

माष	न०	मासा
कर्ष	न०	तोला
पल	न०	शटाक
कुडव	पु०	पाउ भर
प्रस्थ	पु०	सेर
आढक	न०	४ सेर
द्रोण	प०	३२ सेर
शूर्प	पु०	१ मन २४ सेर
खारी	स्त्री०	२ मन १६ सेर
द्रोणि	स्त्री	३ मन ८ सेर
तुला	स्त्री०	तराजु

(नोट) १ अत्रापिनास्ति नियतलिङ्गंविशेष्य विशेषणतया किं बहुना ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वदेश वर्णन

हिन्दुस्थान[१]	न०	हिन्दुस्तान
पञ्चनद[२]	पु०	पञ्जाब
सिन्धुः	पु०	सिन्ध सागर—अटक
सेतु	पु०	पुल
स्तम्भ	पु०	थम्ब
पोत	पु०	जहाज
नौ	स्त्री०	बेरी
नाविक	पु०	मल्लाह
तट	पु०	कनारा
घासस्थान	न०	घाट

इति जनाईन कोषस्य प्रथमो भागः सम्पूर्णः, सोऽयं सिन्धु देशीयडेराख्यवास्तव्यधन्यधनकुलावतं स श्रीयुत पण्डित टिक्कणलालात्मजेन पं० भगवद्दत्त शर्मणानिर्मितः।

ओं शान्तिः ३।

---

(१) हिन्दुस्थानमितिपदंभ्रष्टंप्रतीयतेनकाप्यत्र विशेषाख्यानसमाकोकि परमाख्यांख्यानमार्यस्थानञ्च सर्वत्रप्रसिद्धम् ॥

(२) शतद्रुर्विपाशेरावतीवितस्ताचन्द्रभागेति पञ्चनद्यो यत्र सपञ्चनदोदेशः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक मिलने का पता—

पं० भगवद्दत्त शर्म्मा

A.S.M. स्कूल भूपालवाला

जिला स्यालकोट ।

अथार्य्य स्थानान्तर्गतनदीपुन्जमाङ्गलिक श्लोकमाह। गङ्गासिन्धुसरःस्वतीचयमुनागोदावरीनर्मदा कावेरीसर्यूमहेन्द्रतनयाचमर्न्वतीवेदिका क्षिप्रावेत्रवतीमहासुरनदी ख्याताचयागण्डकी पूर्णापुण्यजलैःसमुद्रसहिताःकुर्वन्तुनोमङ्गलम् ॥

ओं शान्तिः ३ ॥

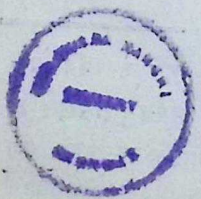

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार

[illegible] 12 [illegible]

पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अंकित है उस तिथि सहित 30 वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा 75 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

24 NOV 2005
DIGITIZED C-DAC
2005-2006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DIGITIZED C-DAC
2005-2006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar